संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
नौनिहाल गौतम

Sanskrit Sahitya Mein SthreeVimarsha : Proceedings of the national seminar held on 29-30 August 2015 at Sagar, organised by Sahitya Akademi with the collaboration of Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.) edited by Radhavallabha Tripathi, Anand Prakash Tripathi & Navnihal Goutham, Sahitya Akademi, New Delhi (2021) ₹ 250/-

कॉपीराइट © साहित्य अकादेमी

Copyright © Sahitya Akademi

राधावल्लभ त्रिपाठी (1949) : संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी (1960) : सह संपादक
नौनिहाल गौतम (1984) : सह संपादक

Radha Vallabha Tripathi (1949): Editor
Anand Prakash Tripathi (1960): Editor
Navnihal Goutham (1984): Editor

विधा : संगोष्ठी आलेख
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी

Genre: Seminar Papers
Published by Sahitya Akademi

प्रथम संस्करण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021

First Edition : 2020
Reprinted : 2021

मूल्य : दो सौ पचास

Price : ₹ 250/-

ISBN : 978-93-89778-90-8

सर्वाधिकारः सुरक्षितः। अकादम्याः अनुमतिं विना छायाप्रतिः रिकॉर्डिंग इति वा केनापि अन्यसूचनाभण्डारणेन पुनःप्राप्तिप्रणाल्या च सह केनापि वैद्युता यान्त्रिकेन माध्यमेन वा कस्यापि अंशस्य पुनरुत्पादनमुपयोगः वा कर्तुं न शक्यते।

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय : रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
secretary@sahitya-akademi.gov.in, 011-23386626/27/28
विक्रय अनुभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001
sales@sahitya-akademi.gov.in, 011-23745297/23364204
कोलकाता : 4, देवेंद्रलाल ख़ान रोड, कोलकाता-700 025
rs.rok@sahitya-akademi.gov.in, 033-24191683/24191706
चेन्नई : मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018
chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in, 044-24311741
मुंबई : 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in, 022-224135744/24131948
बेंगळूरु : सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560 001
rs.rob@sahitya-akademi.gov.in, 080-22245152/22130870

शब्द-संयोजक एवं मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, ग़ाज़ियाबाद-201102

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

11. कालिदास के नाटकों में स्त्री
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 139

12. महाकवि बाणभट्ट का स्त्री-चिंतन
राघवेंद्र शर्मा 155

13. हर्षकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
सुरेंद्र कुमार यादव 163

14. उत्तररामचरितम् में स्त्री
गोपाल लाल मीणा 177

15. समकालीन संस्कृत काव्य में स्त्री
सरोज कौशल 193

16. आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्त्री
अर्चना जोशी 203

17. समकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री
मंजुलता शर्मा 217

18. संस्कृत काव्य परंपरा में नारी
ऋषभ भारद्वाज 229

19. जानकीजीवनम् महाकाव्य में स्त्री
संजय कुमार 240

20. आचार्यराधावल्लभीयसंस्कृतसाहित्ये नारीचेतना
पूर्णचंद्र उपाध्याय 249

लेखकों के पते 255

हर्षकालीन संस्कृत साहित्य में स्त्री

सुरेंद्र कुमार यादव

गुप्तकाल के स्वर्ण युग के पश्चात भारत में विकेंद्रीकरण के दौर को पुनः स्थापित करने में जिन शासकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमें हर्षवर्द्धन प्रमुख था। वह स्वयं विद्वान, साहित्यकार तथा विद्वानों का आश्रयदाता था। उनकी राज्यसभा में बाणभट्ट, मयूर, मातंग एवं दिवाकर जैसे विद्वान कवि निवास करते थे। बाणभट्ट ने कादंबरी, हर्षचरित, चण्डीशतक, पार्वतीपरिणय एवं मुकुटताडित नामक ग्रंथों की रचना की। मयूरभट्ट ने मयूरशतक, सूर्यशतक एवं मयूराष्टक नामक ग्रंथों की रचना की। हर्ष स्वयं भी एक कवि तथा नाटककार था, जिसने रत्नावली, प्रियदर्शिका तथा नागानन्द आदि नाटकों की रचना की। उसके शासन काल में चीनी यात्री ह्वेनसाँग आया जिसने अपनी यात्रा विवरण को 'सी-यू-की' नामक ग्रंथ में उल्लेख किया। प्रस्तुत शोध पत्र में हर्षकालीन साहित्य के आधार पर तत्कालीन समाज में स्त्रियों के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। इनमें नारी के विविध रूपों यथा कन्या, सहचारिणी, माँ, प्रेयसी, पत्नी एवं सखी का वर्णन है। साथ ही तत्कालीन समाज में स्त्रियों से संबद्ध विविध प्रथाओं, संस्कारों, धार्मिक क्रिया-कलापों, शैक्षणिक एवं आर्थिक गतिविधियों आदि के साथ-साथ समाज में उनकी स्थिति जैसे विषयों पर गहनता से प्रकाश डाला गया है।

हर्षकालीन साहित्य में नारी को समाज के अभिन्न अंग के रूप में दिखलाया गया है। उसे समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इस काल में स्त्री दो रूपों में दिखलाई देती है। प्रथम रूप में वह राजकीय अथवा कुलीन वर्ग की भूमिका में दिखती हैं। तो वहीं दूसरी ओर वह समाज में सामान्यजन के रूप में जीवन के विविध संस्कारों से सम्बद्ध दिखती हैं। हर्षकालीन काव्यों में स्त्री को कन्या, माता, पत्नी, वधु एवं विधवा आदि रूपों में वर्णित किया गया है।